जम्भवाणी में लोक की अवधारणा

– डॉ. पुष्पा विश्नोई
सहायक आचार्य (हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय बावड़ी (जोधपुर)

सारांश :– गुरु जाम्भोजी की वाणी विश्नोई पंथ की अमूल्य थाती है। जाम्भोजी की वाणी का समुचित नाम 'जम्भवाणी' है। जाम्भोजी की वाणी **''जीवां नै जुगती अर मुवां नै मुगती''** प्रदान करने वाली है। संत जाम्भोजी के मन में लोक चेतना की तीव्र उत्कंठा रही। जाम्भोजी की वाणी तथा उनकी लोक-चेतना को समझकर कर, स्वाध्याय कर तथा व्यवहार रूप में ग्रहण करके ही मानव जाति अपना कल्याण कर सकती है। जाम्भोजी की लोक-चेतना केवल आध्यात्म परक ही नहीं अपितु व्यक्ति, समाज के अनुरूप एवं वैज्ञानिक दृष्टियुक्त है। जाम्भोजी का चरित्र, उनकी कर्मशीलता, पर्यावरण संरक्षण का सिद्धान्त, गौ पालन, पशु पक्षियों के प्रति दया भाव, जीव रक्षा का सिद्धान्त तथा नित्य-प्रति प्रत्येक व्यक्ति द्वारा यज्ञ और हवन करने की परम्परा आज के युग में आदर्श स्वरूप है। जाम्भोजी की वाणी में आन्तरिक एवं बाह्य षुद्धता की आवष्यकता पर बल दिया, जो कि व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य हेतु आवश्यक है। जाम्भोजी की वाणी पाखण्ड का खण्डन तथा मानवता का मण्डन करती है। इनकी लोक-चेतना वर्तमान में भी उतनी ही प्रासंगिक, महत्त्वपूर्ण तथा मंगलमयी है, जितनी कि मध्यकाल में थी। विनम्रता, क्षमा एवं दया जैसे दिव्य गुणों से मंडित जाम्भोजी की लोकपरक दृष्टिनैतिक मूल्यों की रक्षा, चारित्रिक विकास, पर्यावरण शुद्धि, मानवीय एकता तथा संस्कृति के परिवर्द्धन के लिए संजीवनी की भांति प्राणदायी है।

मूल शब्द :– गुरु जाम्भोजी, लोक-चेतना, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, चारित्रिक विकास, पर्यावरण शुद्धि, मानवीय एकता तथा संस्कृति के परिवर्द्धन।

गुरु जाम्भोजी ने जिस पद्यमय एवं लय–गति युक्त वाणी में उपदेश दिया है, वह पद्याकार वाणी– 'सबद' कहलाती है।[1] इन्हीं 'सबदों' का संग्रह (सबदवाणी) 'जम्भवाणी' है। अतः जाम्भोजी की वाणी का समुचित नाम 'जम्भवाणी' है। श्री जाम्भोजी के वचनों का संकलन 'सबद' कहलाता है।[2]

गुरु जाम्भोजी सन्त विभूतियों में महानतम स्थान रखते हैं। वे धर्माचार्य, ज्ञानाचार्य एवं पंथ प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं। लेकिन इसके अतिरिक्त 'जम्भवाणी' से इनके लोक चेता रूप के दर्षन होते हैं। जम्भवाणी के मूल में लोक चिन्ता, लोक चिन्तन एवं लोक कल्याण निहित है। 'जम्भवाणी' की एक अनूठी विशेषता यह है कि इसके 'सबदों' के पूर्व गद्य प्रसंगों का होना। अर्थात् जाम्भोजी ने अपने अनुयायियों, जिज्ञासुओं को उनके शंका–समाधानार्थ एवं जिज्ञासा–तुष्टि हेतु प्रसंगवत् 'सबद' कहे। अतः प्रत्येक 'सबद'

कथन के पूर्व एक प्रसंग या कथा है जिसका उल्लेख जम्भवाणी आधारित अधिकांश ग्रंथों में हुआ। ऐसा शायद किसी अन्य ग्रंथ में मिलता हो। जाम्भोजी के परिनिर्वाण के बाद लगभग 300 वर्ष तक उनके 'सबद' वाचिक परम्परा में चलते रहे। उसके बाद हस्तलिखित प्रतियों के रूप में लिपिबद्ध होने लगे। पहली सर्वाधिक प्रामाणिक प्रतिलिपि 'परमानंद वाणियाल' की मानी जाती है।

गुरु जाम्भोजी की वाणी विश्नोई पंथ की अमूल्य थाती है। कोई समाज एवं श्रद्धालु अपने परम पूज्य गुरु की दिव्य वाणी में परिवर्तन जैसे अपराध की कल्पना नहीं कर सकता। 'जम्भवाणी' के संरक्षण एवं पाठ रक्षा में वाणी के सामूहिक (गान) उच्चारण की परम्परा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। विश्नोई पंथ के सामाजिक–धार्मिक आयोजनों के अवसर पर समवेत गायन में किसी अन्य शब्द का आगमन, प्रयोग एवं उच्चारण भिन्नता स्वतः ही खटकने लगती है। अतः स्वतः गलती का निराकरण हो जाता है। कई महान् संतों की वाणी के पदों में अलग–अलग क्षेत्रों में स्थानीय भाषा के अनुरूप शब्द प्रयुक्त होने लगते हैं तथा कुछ विशेष शब्दों में अन्तर आ जाता है। परन्तु 'जम्भवाणी' के पाठ के समय सभी विश्नोई बन्धुओं का उच्चारण समान ही होता है चाहे वह राजस्थानी हो, पंजाबी हो या मालवा प्रदेष का हो। जाम्भोजी की वाणी अत्यंत उच्च स्तर की है तथा विश्नोई पंथ में अत्यन्त पूजनीय होने के कारण इन 'सबदों' की मौलिकता सुरक्षित रही है।

गुरु जाम्भोजी की वाणी की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है उन्होंने गहन, गंभीर, सारयुक्त आध्यात्मिक एवं दार्शनिक ज्ञान तथा अपने स्वानुभूत सत्य को बहुत सरल एवं तात्कालिक (मरु भाषा) लोक भाषा में जन साधारण को सरलतापूर्वक समझा दिया।

'जम्भवाणी' (सबदवाणी) की भाषा राजस्थानी है। इनकी वाणी के विषय में कहते हुए डॉ. हीरालाल माहेश्वरी ने लिखा है, 'जम्भवाणी की भाषा ठेठ मरुभाषा है। वह मरुप्रदेश के तत्कालीन ग्रामीण समाज की बोलचाल की भाषा है। विक्रम की 16वीं शताब्दी की मरुभाषा का जैसा ठेठ और मर्मस्पर्शी माधुर्य यहाँ मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। वाणी का परिवेष गाँवों के लोगों के दैनंदिन वातावरण का है। अनेक लोक प्रचलित ग्रामीण जीवन के पहलुओं को दृष्टिगत रखकर जाम्भोजी ने अत्यन्त सहज भाव से अपनी बातें कही है। तभी तो लोक में आज भी प्रचलित है कि जाम्भोजी की वाणी **''जीवां नै जुगती अर मुवां नै मुगती''** प्रदान करने वाली है अर्थात् जम्भवाणी का अनुसरण कर व्यक्ति युक्तिपूर्वक जीवन निर्वाह कर सकता है तथा मृत्यु के पष्चात् मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।

गुरु जाम्भोजी की वाणी ही उनके सिद्धान्तों का संग्रह है। जाम्भोजी की वाणी के धार्मिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक पक्ष पर ही अधिक काम हुआ है, जबकि उनकी वाणी लौकिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वे युगचेता तथा युगद्रष्टा संत थे। उनके सिद्धांत अर्मूत नहीं हैं अपितु लोक चेतना की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध हैं। उनकी वाणी मूर्त लोकवाद के सिद्धान्तों पर आधारित है। आवश्यकता है एक नवीन दृष्टिकोण से समझने की। जहाँ तक सिद्धान्तों की बात होती है, उन्हें मात्र उपदेश ही समझा जाता है जबकि जाम्भोजी

के सिद्धान्त पूर्णतया मूर्त लौकिक रूप पर टिके हैं। उन्होंने प्रत्येक सिद्धान्त को तर्क द्वारा पुष्ट करते हुए उसकी वैज्ञानिकता सिद्ध की। जाम्भोजी ने प्रत्येक सिद्धांत को लोक उपादेयता द्वारा सिद्ध किया। उनके सिद्धांत पूर्णतया व्यावहारिक हैं, जिन्हें मानव सरलतापूर्वक अपने आचरण में उतार सकता है। मध्यकालीन संत कबीर ने कहा था **'तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखन की देखी।'**

यह देखना बाहर अर्थात् संसार, लोक तथा अन्दर अर्थात् अन्तःकरण मन दोनों को ही देखना था। भारत के सभी संतों ने यह किया है। यह दर्शन संत, कवि, दार्शनिक, समाज सुधारक सभी के लिए उपकारक है, अपरिहार्य भी। ये संत कवि शब्द के उपासकों के लिए कवि हैं परन्तु प्रजा के लिए वे सन्त हैं। करुणा भारतीय संस्कृति का चिरन्तन मूल्य है। संत का समूचा अस्तित्व करुणा बरसाता है। सरवर, तरुवर, संतजन चौथा बरसे मेह। चिर तृषित, प्रेम वंचित आखिरी छोर पर बैठे मनुष्य पर वे सन्त बरसे हैं, उनकी करुणा और प्रेम बरसे हैं। निःसंदेह मूल रूप से ब्रह्मोपासक और परलोकगामी थे, उनकी साधना इसी दिशा में रही किन्तु लोक, लोक का मनुष्य और उसका समय सन्तों की दृष्टि से कहीं, कभी भी च्युत नहीं हुआ। वे लोक के थे, लोक में अन्त तक रहे।[3]

गुरु जाम्भोजी ने स्वस्थ भेदभाव रहित एवं मानवीय भावनाओं की कल्पना को साकार करते हुए मूर्त लोकवाद की स्थापना की। जाम्भोजी की वाणी में सामाजिक चिन्तन एवं मूल्य परक समाज स्थापना हेतु रचनात्मक निर्देषों के अन्तर्गत विनम्रता, क्षमा, सत्य, शील, तप, संतोष, संयम, दया, मानसिक शुद्धता, ईमानदारी, परोपकार तथा सहयोग आदि नैतिक नियमों पर विशेष बल दिया।[4]

उन्होंने लोगों को अपनी वाणी द्वारा विभिन्न प्रकार के कृत्यों के करने और न करने का उल्लेख कर सार रूप में उनके परिणाम बताए हैं। मानवोचित व्यवहार आत्मज्ञान प्राप्ति की प्रेरणा ग्रहण करने और दुष्कृत्यों से विरत करने में ऐसे परिणामों का विशेष महत्त्व हैं।[5] धर्म के नाम पर हिंसा करने वाले लोगों को सावधान करते हुए कहते हैं–

'जीवां ऊपर जोर करी जै, अंतकाल होयसी भारूं।[6]

गुरु जाम्भोजी ने समाज, परिवार एवं व्यक्ति हेतु कर्मषील होना आवष्यक बताया। अच्छे कर्म करते हुए तथा हक की कमाई से अर्जित धन से जीवन यापन करने को कहा। उन्होंने व्यक्ति को सादा जीवन उच्च विचार का संदेष दिया तथा उनमें स्वावलम्बन का संचार किया – **हिरदै नाम विष्णु का जंपो, हाथे करो टवाई।**

गुरु जाम्भोजी की वाणी में उपदेश ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के कल्याण का संदेश भी है। इतना सरल संदेश कि प्रत्येक व्यक्ति साधारण जीवन यापन करते हुए आचरण में उतार सकता है। गुरु

जाम्भोजी कर्म फल को मानते हैं तथा उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मानुसार फल की प्राप्ति होती है। प्रत्येक जीव को पृथक–पृथक मार्गों पर चलना होता है।

भाग परापति करमां रेखा, दरगै जुवंलां–जुवला माघूं।[7]

जाम्भोजी ने लोगों को कर्म शुद्धता हेतु प्रेरित करते हुए कहा है कि सत्संग आवश्यक है। अच्छे एवं कर्मवान लोगों की संगति करके संसार व परलोक दोनों को संवार सकता है। उन्होंने बहुत सुन्दर उदाहरण द्वारा इस बात की पुष्टि की है, जैसे (बेड़े) काठ की नाव के संग लोहा भी पानी पर तैरने लगता है, वैसे ही दुर्जन व्यक्ति सत्संग से उत्कृष्टता को प्राप्त कर लेता है तथा मानवीयता से परिपूर्ण हो जाता है।

उत्तम संग सनेहूँ[8]

गुरु जाम्भोजी लोक मंगल के सच्चे साधक थे तथा उनकी वाणी व्यक्ति की प्रगति की ओर अग्रसर करने वाली है। उनकी वाणी जातीय एकता की भी एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

'उत्पत्ति हिन्दू, जरणा जोगी।
क्रिया ब्राह्मण, दिल दरबेसां।
उन्मुन मुल्ला अकल मिसलमानी।[9]

वे कहते हैं कि वे जन्म से हिन्दू, कार्यों से योगी, कर्म से ब्राह्मण सदृश, मन दरवेश की भाँति कोमल, आत्म संयमी तथा ज्ञान में मुसलमान की भाँति है।

राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता में जाम्भोजी का महत्त्वपूर्ण अवदान है। वे अपनी वाणी से संपूर्ण भारत एवं अन्य देशों में भ्रमण करते हुए वहाँ के लोगों को परखने तथा उन्हें सुपथ दिखाने का कार्य किया।

''फिरि –फिरि दुनियां परखि लहूं।[10]

संत जाम्भोजी के मन में लोक चेतना की तीव्र उत्कंठा रही। उसके कारण जीवन भर उनका धर्म सत्ता एवं राज सत्ता दोनों संघर्ष का सामना करना पड़ा। जिनका जम्भवाणी में कई स्थानों पर उल्लेख है। दिल्ली के बादशाह सिकन्दर को चेताने का जिक्र जाम्भोजी साहित्य एवं जम्भवाणी दोनों में मिलता है।

असकंदर चेतायो।
मान्यो शील हकीकत जाग्यो।''[11]

सैद्धान्तिक ज्ञान के स्थान पर लौकिक ज्ञान का संदेष दिया। सभी लोगों को **''अड़सठ तीर्थ हिरदां भीतर, बाहर लोकाचारूं''**[12] का विचार दिया।

उनका मानना था कि सभी तीर्थ मनुष्य के हृदय में स्थित है। सांसारिक लोग विभिन्न तीर्थाटन कर मात्र लोक में स्थापित एक कार्य व्यापार का अंधानुकरण कर रहे हैं।

भारतीय संस्कृति को पुनः जीवित करने तथा उसे संपादित करने में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। संस्कृति वह आधारशिला है, जिस पर जाति, समाज व देश का विशाल भव्य प्रासाद निर्मित होता है। असल में संस्कृति जीवन का एक तरीका है। संस्कृति मानव दशा तथा दिशा का बोध कराती है।[13] आचार विचार एवं मनोभावों की परिष्कृति एवं शुद्धि ही संस्कृति है। गुरु जाम्भोजी ने कहा–

''तन मन धोइये संजम हुइये।''[14]

व्यक्ति अपने संयमित आचरण के द्वारा ही अपनी संस्कृति का उत्थान कर सकता है। भारतीय संस्कृति पर आध्यात्मिकता और दर्षन का प्रभाव अत्यंत गहरा है। जाम्भोजी ने लोक को ईश्वर प्राप्ति हेतु अंत्यत सरल, सहज एवं व्यावहारिक मार्ग दिया– वह है नाम स्मरण का सिद्धान्त।

विष्णु मंत्र है प्राण आधार जो जपै सौ उतारै पार।''[15]

गुरु जाम्भोजी के सभी सिद्धान्त लोक को आधार बनाकर, उन्हीं के अनुरूप दिये गये। वे लोक के थे, लोक के मध्य रहे तथा अपने वाणी के रूप में लोक में ही समाहित हो गये। उनकी वाणी के पालन हेतु वैराग्य लेकर विमुख होने की आव"यकता नहीं है, अपितु सामान्य जीवन यापन करते हुए सरलता पूर्वक उनका निर्वाह किया जा सकता है। उनकी वाणी निवृत्तमार्गी नहीं अपितु प्रवृत्तिमार्गी है, जो लोक का पथ सदैव प्रशस्त करती रहेगी।

उन्होंने तत्कालिक दिग्भ्रमित जनता को जीवन जीने की उचित विधि बताते हुए नम्रता क्षमा, एवं स्वभाव की सरलता अपनाने का संदेश दिया–

'जीवत मरो रे जीवत मरो, जिण जीवंण की विधि जांणी।
जे कोई हो हो होय करि आवै, तो आपण होइयै पांणी।
जांहकै बोहती नवंणी बोहती खंवणी,
बोहती किरिया समांणी।'[16]

जाम्भोजी स्वयं भी आजीवन क्रियाशील रहे तथा उन्होंने जनता को परिश्रम एवं कर्म के महत्व बताते हुए व्यक्ति एवं समाज की उन्नति हेतु आवश्यक कहा –

"कणं विणि कूकस, रस विणि वाकस,
विणि किरिया परिवार किसौ।"[17]

जाम्भोजी ने लोगों को कथनी एवं करनी में साम्य रखने का पाठ पढ़ाया–

'पहलू किरिया आप कुमाइयै, तो अवरां नै फुरमाइयै।
जे क्यौंह कीजै मरण पहलू, मत भळकइ मर जाइयै।'[18]

उन्होंने कहा कि हक की कमाई जैसी भी मिले, बिना संकोच सहर्ष स्वीकार कर लिया जाये :–

'खरड़ औढ़ीजै, तूंबा जीमीजै, सुरह दुहीजै
किरत खेत की सीवं मैं लीजै पीजै उडा नीरूं"[19]

जाम्भोजी की वाणी तथा उनकी लोक-चेतना को समझकर कर, स्वाध्याय कर तथा व्यवहार रूप में ग्रहण करके ही मानव जाति अपना कल्याण कर सकती है। जाम्भोजी की लोक-चेतना केवल आध्यात्म परक ही नहीं अपितु व्यक्ति, समाज के अनुरूप एवं वैज्ञानिक दृष्टियुक्त है। जाम्भोजी का चरित्र, उनकी कर्मशीलता, पर्यावरण संरक्षण का सिद्धान्त, गौ पालन, पशु पक्षियों के प्रति दया भाव, जीव रक्षा का सिद्धान्त तथा नित्य-प्रति प्रत्येक व्यक्ति द्वारा यज्ञ और हवन करने की परम्परा आज के युग में आदर्श स्वरूप है। इन नियमों का पालन करके प्रदूषित वातावरण से मुक्त होकर स्वस्थ-शुद्ध पर्यावरण निर्मित किया जा सकता है। इन्होंने वाणी में आन्तरिक एवं बाह्य शुद्धता की आवश्यकता पर बल दिया, जो कि व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य हेतु आवश्यक है।

जाम्भोजी की वाणी पाखण्ड का खण्डन तथा मानवता का मण्डन करती है। इनकी लोक-चेतना वर्तमान में भी उतनी ही प्रासंगिक, महत्त्वपूर्ण तथा मंगलमयी है, जितनी कि मध्यकाल में थी। विनम्रता, क्षमा एवं दया जैसे दिव्य गुणों से मंडित जाम्भोजी की लोकपरक दृष्टि, नैतिक मूल्यों की रक्षा, चारित्रिक विकास, पर्यावरण शुद्धि, मानवीय एकता तथा संस्कृति के परिवर्द्धन के लिए संजीवनी की भांति प्राणदायी है।

---

1 जाम्भोजी की वाणी – सूर्य शंकर पारीक, पृ. 109

2 श्री जम्भवाणी टीका – डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, मुखबन्ध पृ. 6

3 राजस्थान के संत कवियों के दर्शन और उनकी लोक धर्मिता –डॉ. रामप्रसाद दाधीच 'प्रसाद', पृ. 98

4 वही, सबद सं. 21, सबद 28, सबद 27, सबद 11, सबद 106, सबद 82, सबद 69 आदि।

5 जाम्भोजी की सबदवाणी (मूल और टीका) – डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, पृ. 18, प्र. सं. 1976

6 शब्दवाणी जम्भसागर :– कृष्णानन्द आचार्य, सबद 9, पृ. 11, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, मुकाम, षष्ठम् सं. सन् 2012

7 श्री जम्भवाणी टीका :– डॉ. हीरालाल माहे"वरी, सबद 81 पृ. 248, श्री गुरु जम्भेश्वर साहित्य सभा अबोहर, प्र. सं. 2011

8 जाम्भोजी की सबदवाणी (मूल और टीका) :– डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, सबद 14 पृ. 32–33, प्र. सं. 1976

9 विश्नोई धर्म प्रकाश :– स्वामी भागीरथ आचार्य, सबद 6, पृ. 38 चतुर्थ सं. 2008

[10] श्री जम्भवाणी टीका :– डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, सबद 63, पृ. 179, श्री गुरु जम्भेश्वर साहित्य सभा अबोहर, प्र. सं. 2011

[11] जम्भगीता :–सं. मालाराम गोदारा, सबद 29, पृ. 114, जम्भेश्वर प्रकाशन सांचौर

[12] शब्दवाणी जम्भसागर – कृष्णानन्द आचार्य, सबद 3 पृ. 24, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, मुकाम, षष्ठम् सं. सन् 2012

[13] संस्कृति के चार अध्याय– रामधारी सिंह दिनकर पृ. 2, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद सं. 1994

[14] शब्दवाणी जम्भसागर – कृष्णानन्द आचार्य, सबद –76 पृ. 218, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, मुकाम, षष्ठम् सं. सन् 2012

[15] श्री जम्भवाणी टीका – डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, विष्णुमंत्र, पृ 336, श्री गुरु जम्भेश्वर साहित्य सभा अबोहर, प्र. सं. 2011

[16] जम्भसागर –स. कृष्णानंद आचार्य, पृ. 282 जाम्भाणी सस्ता साहित्य, जाम्भाणी सस्ता साहित्य प्रकाशन माला षष्ठम स. 2012

[17] सबदवाणी गुटका :– स. कृष्णानंद आचार्य, पृ. 118, सबद सं. 68, जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर, सं. 2012

[18] श्री जम्भवाणी : टीका :– डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, पृ. 96,श्री गुरु जम्भेश्वर साहित्य सभा फिरोजपुर द्वितीय सं. 2011

[19] सबदवाणी गुटका :– स. कृष्णानंद आचार्य, पृ. 167, सबद सं. 111, जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर, सं. 2012